उपसंहार

उपसंहार

हिंदी भाषा एवं आशय की दृष्टि से कक्षा नौवीं एवं दसवीं की हिंदी पाठ्यपुस्तकों का अनुशीलन में छात्रोंका भाषिक कौशल, आशय का भंडार की जानकारी लेना। छात्रों को हिंदी लिखना, बोलना आता है या नहीं इसकी जानकारी लेना। छात्र हिंदी में विभिन्न विषयपर प्रभावी ढंग से बोलते या लिखते है, यह जानकारी लेना। छात्र दीर्घोत्तरी प्रश्नों के उत्तर, पाठ के आशय स्पष्ट कर पाते हैं या नहीं इसकी जानकारी लेना। इसपर कुछ निष्कर्ष निकालने का प्रयास किया हैं।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध में मुख्य पाँच अध्याय हैं। गत पाँच अध्यायों में पाठ्यपुस्तक निर्मिति प्रक्रिया, हिंदी भाषा की संरचना, कक्षा नौवीं एंव दसवीं के हिंदी पाठ्यपुस्तकों का भाषिक उद्देश्यों के आधार पर अनुशीलन, कक्षा नौवीं एवं दसवीं के हिंदी पाठ्यपुस्तकों का आशय के आधार पर अनुशीलन, कक्षा नौवीं एवं दसवीं के हिंदी पाठ्यपुस्तकों के अध्ययन और अध्यापन संबंधी दिशाएँ आदि का विवेचन किया है। पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक एक दूसरे पर आधारित है। कक्षा नौवीं एवं दसवीं के हिंदी पाठ्यपुस्तक उचित बनी हैं। पाठ्यचर्या भी कक्षा नौवीं एवं दसवीं के स्तर के अनुसार बनी है। पाठ्यक्रम स्तरानुकूल बना है।

हिंदी विषय पढ़ाते समय हिंदी भाषा की संरचना का उपयोग करना पडता है। छात्रों को विभिन्न प्रकार के भाषिक कौशल पढ़ाने के लिए तथा उसका विकास करना अध्यापक का प्रमुख कर्तव्य बनता है।

कक्षा नौंवीं एवं दसवीं की हिंदी पाठ्यपुस्तक की भाषा की दृष्टि से अनुशीलन किया है। पाठ का उद्देश्य व्याकरण की जानकारी, वर्तनी-मौखिक वर्तनी, लिखित वर्तनी स्पष्ट की है। भाषिक उद्देश्य, भाषण-संभाषण, वाचन, लेखन, पाठ्यक्रम की उद्देश्य की दृष्टि से पाठ का स्थान आदि जानकारी स्पष्ट की है।

कक्षा नौवीं एवं दसवीं की हिंदी पाठ्यपुस्तकों का आशय के आधार पर अनुशीलन किया है। पाठों का चयन ठीक से किया है। पाठ्यपुस्तक विशेषताओं के अनुसार बनाया है। पाठ के आशय छात्रों के स्तरानुकूल बनाया है। पाठ विभिन्न प्रकार के हैं।

कक्षा नौवीं एवं दसवीं के हिंदी पाठ्यपुस्तकों के अध्ययन और अध्यापन संबंधी दिशाएँ स्पष्ट की है। ६० छात्र, १० शिक्षक-प्रशिक्षक, १० अध्यापक, ५ प्रधानाध्यापक से साक्षात्कार प्राप्त किया है। उनसे भाषा एवं आशय की दृष्टि से राय प्राप्त की है।

प्रथम अध्याय में विषयप्रवेश, पाठ्यचर्या: अर्थ एवं परिभाषा, कक्षा नौवीं एवं दसवीं की पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम अर्थ एवं परिभाषा, कक्षा नौवीं एवं दसवीं के हिंदी विषय के पाठ्यक्रम की जानकारी दी हैं।

पाठ्यपुस्तक - का महत्त्व एवं आवश्यकता, पाठ्यपुस्तकों की विशेषताओं के आधार पर कक्षा नौवीं एवं दसवीं के हिंदी पाठ्यपुस्तकों की समीक्षा की है। पाठ्यपुस्तक निर्मिति प्रक्रिया के संबंध में जानकारी शिक्षक संक्रमण मासिक पत्रिका का आधार लिया हैं। कक्षा नौवीं एवं दसवीं की हिंदी पाठ्यपुस्तक उचित बनी है। पाठ्यपुस्तक निर्मिति प्रक्रिया में ग्रामीण तथा शहरी अध्यापक, तज्ञों, लेखकों आदि का समावेश करना चाहिए, ताकि ग्रामीण और शहरी छात्रों की दृष्टि से पुस्तक बनायी जाए, छात्र सुलभता से अध्ययन कर सके। चाहे वह ग्रामीण हो या शहरी। पाठ्यपुस्तक की विशेषताओं एवं आवश्यकता के अनुसार पाठ्यपुस्तक निर्माण करना चाहिए।

द्वितीय अध्याय में हिंदी भाषा की संरचना प्रस्तुत की है। पाठ्यपुस्तकों द्वारा भाषिक ज्ञान श्रवण, भाषण, वाचन, लेखन कौशल की जानकारी दी है। कक्षा नौवीं एवं दसवीं के स्तर पर द्वितीय भाषा हिंदी शिक्षा के उद्देश्य, कक्षा नौवीं एवं दसवीं के स्तर पर द्वितीय भाषा हिंदी अध्यापक के उद्देश्य, निष्कर्ष स्पष्ट किए हैं। छात्रों को विभिन्न प्रकार के भाषिक कौशल्य पढ़ाने के लिए तथा उसका विकास करना अध्यापक का प्रमुख कर्तव्य बनता है। इसके लिए अध्यापक के उद्देश्य के अनुसार नए तंत्र का प्रयोग करते हुए पढ़ाना आवश्यक है। छात्रों का बौद्धिक मानसिक दृष्टि से विकास होता है, भाषा प्रवाहित होती है।

तृतीय अध्याय में भाषा-अर्थ एवं परिभाषा स्पष्ट की हैं। कक्षा नौवीं एवं दसवीं के हिंदी पाठ्यपुस्तकों का भाषिक उद्देश्यों के आधार पर अनुशीलन किया हैं। पाठ का उद्देश्य, नए शब्द, व्याकरण, भाषिक कौशल-श्रवण-आकलन, भाषण-संभाषण, वाचन, तथा लेखन आदि का समावेश किया हैं। छात्रों की लिखते समय बहुत सारी गलतियाँ होती हैं। व्याकरण की गलतियाँ करते हैं। उच्चारण भी ठीक से नहीं कर पाते हैं। छात्रों ने पाठ्यपुस्तक में दिए नए शब्दों

का उच्चारण, पठन एवं लेखन करना आवश्यक है। उच्चारण पठन एवं लेखन करने से छात्रों का भाषिक कौशल्य में सुधार हो सकता है।

चतुर्थ अध्याय में आशय अर्थ एवं परिभाषा, आशय के प्रकार स्पष्ट किए है। कक्षा नौवीं एवं दसवीं के हिंदी पाठ्यपुस्तक में से पाठों के आशय का प्रकार एवं संक्षिप्त आशय स्पष्ट किए हैं। निर्धारित पाठ्यपुस्तक में विभिन्न प्रकार के पाठ दिए गए हैं। छात्रों का आशय भंडार बढ़ने के लिए सहायक सिद्ध होता है। विभिन्न लेखक कों के पाठ का समावेश किया है। आशय विभिन्न प्रकार के स्पष्ट किए है। छात्र पाठ्यपुस्तक का वाचन समझकर नहीं पढ़ते। परीक्षा के दृष्टि से ही पाठ का अध्ययन करते है। पाठ्यपुस्तक में कहानी, जीवनी, एकांकी, निबंध, कविता आदि के माध्यम से आशय स्पष्ट किए है। पाठ के आशय विचारप्रधान, प्रेरणाप्रधान है।

पंचम अध्याय में कक्षा नौवीं एवं दसवीं के हिंदी पाठ्यपुस्तकों के अध्ययन और अध्यापन संबंधी दिशाएँ स्पष्ट की है। कुछ संबंध नमुना छात्रों, शिक्षक-प्रशिक्षकों, अध्यापकों, प्रधानाध्यापकों से साक्षात्कार कर के निष्कर्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया हैं। साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी को सारणी के रुप में प्रस्तुत किया हैं। छात्र हिंदी में लिखते तथा बोलते हैं, लेकिन मानक भाषा में नहीं। अधिकांश छात्र सही उच्चारण नहीं करते हैं। सक्षमता से अधिकांश छात्र लिख तथा बोल नहीं पाते हैं। अध्यापकों को भाषिक उद्देश्य के अनुसार अध्यापन करना चाहिए। छात्र हिंदी में बोलने का अभ्यास नहीं करते हैं। छात्र पूरकवाचन नहीं करते हैं। समाचार पत्र नहीं पढ़ते हैं। मनोरंजनात्मक साहित्य नहीं पढ़ते हैं। बालसाहित्य नहीं पढ़ते हैं। केंद्रिय हिंदी निदेशालय द्वारा निर्धारित मानक हिंदी पुस्तिका का उपयोग नहीं करते हैं, जिससे छात्रों का अशुद्ध लेखन होता है। पाठशाला में समाचार पत्र-पत्रिकाएँ मँगवाना चाहिए। पाठशाला में समाचार पत्र-पत्रिकाएँ, पूरक वाचन करने के लिए स्वतंत्र कमरे की सुविधा नहीं है।

पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक की निर्मिति करते समय शहरी सदस्य के साथ ग्रामीण सदस्य का समावेश होना जरुरी है, ताकि निर्दोषता आ सकती है। शहरी, ग्रामीण के लिए एक जैसी ही पाठ्यपुस्तक ठीक हैं, लेकिन उस पाठ्यपुस्तक में शहरी तथा ग्रामीण छात्रों के दृष्टि से पाठ होने चाहिए।